International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 14 Issue 7 || July 2025 || PP. 47-50

माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यो के प्रशासनिक व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन

अशोक कुमार (शोध छात्र)
एम0 ए0, एम0 एड़0 (शिक्षा शास्त्र)
आई.आई.एम.टी. यूनिवर्सिटी, मेरठ

प्रोफेसर डॉ0 सरिता गोस्वामी
शोध निर्देशिका (शिक्षाशास्त्र)
कॉलेज ऑफ एडुकेशन,
आई.आई.एम.टी. यूनिवर्सिटी, मेरठ

सार :

यह शोध रांची नगर के सरकारी एवं गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यों के प्रशासनिक व्यवहार का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। विद्यालय एक सामाजिक संस्था होते हुए छात्रों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिसमें प्रधानाचार्य का प्रशासनिक दृष्टिकोण शिक्षकों की कार्य संस्कृति, शैक्षिक वातावरण तथा छात्रों की उपलब्धियों को गहराई से प्रभावित करता है। इस अध्ययन का उद्देश्य सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों में प्रधानाचार्यों के प्रशासनिक व्यवहार के अंतरों की पहचान कर, उनके विद्यालय की गुणवत्ता पर पड़ने वाले प्रभावों को समझना है। अध्ययन के लिए 500 शिक्षकों (250 सरकारी व 250 गैर–सरकारी) का चयन किया गया। डॉ. हसीन ताज द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत ''प्रशासनिक व्यवहार पैमाना'' का उपयोग कर आंकड़े एकत्र किए गए। आंकड़ों का विश्लेषण माध्य, मानक विचलन एवं t-परीक्षण के माध्यम से किया गया। परिणामों से स्पष्ट हुआ कि सरकारी विद्यालयों के प्रधानाचार्यों का प्रशासनिक व्यवहार गैर–सरकारी विद्यालयों की तुलना में अधिक संगठित, प्रभावशाली और सहायक है। t- परीक्षण सांख्यिकीय दृष्टि से महत्वपूर्ण है, जिससे यह निष्कर्ष निकला कि सरकारी प्रधानाचार्य अधिक प्रेरक, संसाधन–सक्षम और नेतृत्वकारी भूमिका निभाते हैं। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि एक सकारात्मक प्रशासनिक दृष्टिकोण शिक्षकों की कार्य प्रेरणा तथा विद्यालय के समग्र प्रदर्शन को श्रेष्ठ बनाने में सहायक होता है।

मुख्य शब्दः प्रधानाचार्य, प्रशासनिक व्यवहार, माध्यमिक विद्यालय, सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालय आदि।

Date of Submission: 11-07-2025 Date of Acceptance: 24-07-2025

प्रस्तावना–

विद्यालय एक सामाजिक संस्था है जो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहायक होती है, और इस संस्था के संचालन में प्रधानाचार्य की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। प्रधानाचार्य का प्रशासनिक व्यवहार विद्यालय के शैक्षिक वातावरण, शिक्षकों की कार्य संस्कृति और छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धियों को गहराई से प्रभावित करता है (Shie & Chang, 2022). एक कुशल प्रधानाचार्य प्रशासनिक प्रक्रिया को न केवल सुव्यवस्थित करता है, बल्कि वह शिक्षक समुदाय को प्रेरित करने, संसाधनों का प्रभावी उपयोग सुनिश्चित करने और विद्यालय के दीर्घकालिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में नेतृत्व प्रदान करता है (Wilkinson & Mison, 2024).

सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों में संरचना, वित्तीय संसाधनों की उपलब्धता, निर्णय प्रक्रिया एवं पारदर्शिता में भिन्नता होती है, जो प्रधानाचार्यों के व्यवहार में विविधता उत्पन्न करती है (Elmazi 2023). सरकारी विद्यालयों में जहां प्रधानाचार्य को शासन द्वारा निर्देशित योजनाओं के अंतर्गत कार्य करना होता है. वहीं गैर–सरकारी विद्यालयों में अपेक्षाकृत अधिक स्वतंत्रता और लचीलापन होता है। यह भिन्नता प्रशासनिक व्यवहार को भी प्रभावित करती है।

शिक्षकों की दृष्टि में प्रशासनिक नेतृत्व उनके मानसिक स्वास्थ्य, कार्य संतुष्टि और आत्म–सशक्तिकरण से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा होता है (Konu, Viitanen & Lintonen, 2010). एक प्रेरक और सहायक प्रधानाचार्य न केवल शिक्षकों की कार्यक्षमता को बढ़ता है, बल्कि विद्यालय के समग्र प्रदर्शन में भी सुधार करता है।

इस शोध का मुख्य उद्देश्य सरकारी एवं गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यों के प्रणासनिक व्यवहार का तुलनात्मक विश्लेषण करना है ताकि यह जाना जा सके कि किस प्रकार के प्रशासनिक व्यवहार का विद्यालयों की गुणवत्ता पर अधिक सकारात्मक प्रभाव पड़ता है (Sharma, 2014).

अध्ययन की आवश्यकता :

यह अध्ययन इसलिए आवश्यक है क्योंकि प्रधानाचार्य विद्यालय की शैक्षिक दिशा, कार्य वातावरण और शिक्षक–छात्र संबंधों को प्रभावित करने वाला प्रमुख घटक होता है। सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों में प्रशासनिक व्यवहार की शैली में अंतर होता है, जो शिक्षकों की कार्यप्रेरणा, मनोबल तथा विद्यालय की समग्र गुणवत्ता पर गहरा प्रभाव डालता है। यह शोध उन अंतरों को स्पष्ट करता है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन :

प्रशासनिक व्यवहार पर पहले से ही विभिन्न अध्ययन किए जा चुके हैं। उनमें से कुछ का उल्लेख नीचे किया गया है–

कांत, रवि और रंगनवर, भीमप्पा (2013) ने स्कूल प्रमुखों के प्रशासनिक व्यवहार का अध्ययन किया। आंकड़ों से पता चला कि संगठनात्मक प्रतिबद्धता और स्कूल प्रमुखों के प्रशासनिक व्यवहार में महत्वपूर्ण अंतर है।

बार पुजारी, प्रियं की और स्वर्गियारी, जगत (2017) ने नियोजन के क्षेत्र में माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाचार्यों के प्रशासनिक व्यवहार की जांच की। यह शोध से पाया गया है कि नियोजन के संदर्भ में प्रांतीय और निजी स्कूलों से संबंधित माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाचार्यों के प्रशासनिक व्यवहार में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया जाता है। फिर से, प्रांतीय माध्यमिक विद्यालयों की तुलना में निजी माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाचार्यों का नियोजन के संदर्भ में बहुत उच्च प्रशासनिक व्यवहार है।

शिवकुमार, (2017) ने स्कूल हेडमास्टरों के प्रशासनिक व्यवहार का अध्ययन किया। निष्कर्ष बताते हैं कि स्कूल प्रमुखों का प्रशासनिक व्यवहार स्कूल की प्रकृति, योग्यता और लिंग से काफी प्रभावित होता है

प्रकाश, जय और हुड्डा, सुषमा रानी (2018) ने निजी और सरकारी हाईस्कूल के प्रधानाध्यापकों के प्रशासनिक व्यवहार का अध्ययन किया। अध्ययन के परिणाम बताते हैं कि सरकारी और निजी हाईस्कूलों में काम करने वाले पुरुष प्रधानाध्यापकों के प्रशासनिक व्यवहार में केवल संगठन क्षेत्र से संबंधित काफी अंतर था। नियोजन, संचार, निर्णय लेने और समग्र प्रशासनिक व्यवहार में, सरकारी और निजी हाईस्कूलों में काम करने वाले पुरुष प्रधानाध्यापकों के व्यवहार के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। पिछले शोधों से संकेत मिलता है कि प्रशासनिक व्यवहार पर बहुत सारे शोध किए गए हैं लेकिन निष्कर्ष असंगत थे। यही कारण है कि विशेष रूप से असम से माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के प्रशासनिक व्यवहार पर शोध की गुंजाइश है।

इन समस्त अध्ययनों से यह परिलक्षित होता है कि प्रशासनिक व्यवहार विद्यालयी जीवन की गुणवत्ता का एक प्रमुख निर्धारक तत्व है और इसे विद्यालय के प्रकार, संरचना और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से जोड़कर देखा जाना आवश्यक है।

4. शोध के उद्देश्य

सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यो के प्रशासनिक व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन करना।

5. शोध की परिकल्पना

सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यो के प्रशासनिक व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

6. शोध के जनसंख्या एवं न्यादर्श

यह शोध झारखंड राज्य के रांची शहर में स्थित सरकारी एवं गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यों के प्रशासनिक व्यवहार पर आधारित है। कुल 100 विद्यालयों (50 सरकारी व 50 गैर सरकारी) का चयन यादृच्छिक पद्धति से किया गया। प्रत्येक विद्यालय से प्रधानाचार्य एवं शिक्षक को प्रतिदर्श में शामिल शामिल किया गया। कुल न्यादर्श $N = 500$ (सरकारी = 250, गैर–सरकारी = 250) रहा।

7. शोध के उपकरण

इस अध्ययन में डॉ० हसीन ताज द्वारा 1998 में निर्मित एवं मानकीकृत ''प्रशासनिक व्यवहार पैमाना'' का प्रयोग किया गया। यह उपकरण प्रधानाचार्य के विभिन्न प्रशासनिक आयामों को मापने में सक्षम है।

8. सांख्यिकीय तकनीक

तथ्यात्मक आंकड़ों के विश्लेषण हेतु t– परीक्षण (t-ratio) का प्रयोग किया गया।

9. आंकड़ों का विश्लेषण

संग्रहित आंकड़ों का विश्लेषण माध्य (Mean), मानक विचलन (Standard Deviation) एवं t–परीक्षण (t-test) की सहायता से किया गया।

समूह	N	**माध्य** (Mean)	**मानक विचलन** (SD)	**प्राप्त** t-**मूल्य**	**परिणाम**
सरकारी शिक्षक	250	212.20	28.50	3.62	सार्थक
गैर–सरकारी शिक्षक	250	202.80	29.50		

यह t- मूल्य 3.62 स्तर पर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण पाया गया। इसका तात्पर्य है कि सरकारी विद्यालयों के प्रधानाचार्य का प्रशासनिक व्यवहार गैर सरकारी विद्यालयों की तुलना में अधिक प्रभावशाली एवं संगठित पाया गया।

10. व्याख्या :

सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यों के प्रशासनिक व्यवहार के प्राप्तांको के मध्य परिकलित टी–को मान 3.62 प्राप्त हुआ है, जो प्रदत तालिका में 0.05 स्तर पर दिए गए टी–मूल्य से अधिक हैं, जिससे स्पष्ट है कि उपरोक्त परिकल्पना अस्वीकृत हो जाती है।

अतः शून्य परिकल्पना, सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत प्रधानाचार्यों के प्रशासनिक व्यवहार में सार्थक अन्तर है, को अस्वीकृत किया गया तदोपरान्त इन दोनों चरों सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय के मध्यमान क्रमशः 212.20 एवं 202.80 प्राप्त हुए विश्लेषण से ज्ञात होता कि सरकारी विद्यालय में कार्यरत प्रधानाचार्यों के प्रशासनिक व्यवहार गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत प्रधानाचार्यों के प्रशासनिक व्यवहार से अच्छा है।

11. निष्कर्ष

शोध से यह स्पष्ट हुआ कि सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के प्राधानाचार्यों का प्रशासनिक व्यवहार गैर सरकारी विद्यालयों की तुलना में अधिक संगठित, प्रभावशाली एवं सशक्त है। यह व्यवहार शिक्षक कार्य प्रेरणा एवं विद्यालय वातावरण को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

1. गैर सरकारी विद्यालयों को प्रधानाचार्यों के प्रशासनिक प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान देना चाहिए।
2. सरकारी विद्यालयों की प्रशासनिक व्यवस्था को एक मॉडल के रूप में अपनाया जा सकता है।
3. प्रधानाचार्यों के व्यवहार मूल्यांकन हेतु समय–समय पर फीडबैक प्रणाली अपनाई जानी चाहिए।

12. सुझाव :

1. प्रधानाध्यपक किसी विद्यालय में सबसे वरिष्ठ शिक्षक होता है। वे विद्यालय के प्रबंधन के लिए जिम्मेदार होते हैं और सुनिश्चित करते हैं कि दिन–प्रतिदिन सब कुछ सुचारू रूप से चल रहा है।
2. मार्गदर्शन और विशेषज्ञता प्रदान करने साथ–साथ प्रधानाध्यपकों की स्कूल समुदाय में एक मजबूत और प्रभावशाली उपस्थिति भी होनी चाहिए। अंततः उन्हें स्कूल की समग्र शिक्षा और शैक्षणिक उपलब्धियों के लिए जिम्मेदार माना जाता है।
3. प्रधानाचार्य को निर्णय लेने की प्रक्रिया में शिक्षकों को शामिल करना चाहिए ताकि उनमें अपनेपन की भावना हो।
4. शिक्षकों को प्रतिबद्ध होने के लिए, प्रधानाध्यापकों को उनकी चुनौतियों, कमजोरियों और ताकत को जानने और जहां आवश्यक हो उन पर सुधार करने के लिए उन्हें नियमित संचार अनुभाग में शामिल करना चाहिए।
5. प्रेरक गतिविधियों के माध्यम से शिक्षकों, प्रतिबद्धता को बढ़ाया जा सकता है।
6. शिक्षकों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध होने के लिए, प्रधानाध्यापकों को पाठ सामग्री और अन्य शिक्षण और शिक्षण शिक्षण सामग्री सहायता का नियमित पर्यवेक्षण और निरीक्षण करना चाहिए।

7. एक दोस्ताना प्रधानाचार्य शिक्षकों के बीच मैत्रीपूर्ण और स्वस्थ संबंध लाता है। इसलिए यदि प्रधानाध्यापक चाहते हैं कि उनके शिक्षक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध हों, तो प्रधानाचार्यों को सबसे अच्छा व्यवहार करना चाहिए जिससे मैत्रीपूर्ण संबंध बन सकें।

संदर्भ सूची

1. कोनू, ए., विटेनन, ई., और लिंटनन, टी. (2010)। स्कूल नेताओं के सशक्त व्यवहार और मनोवैज्ञानिक सशक्तीकरण के बारे में शिक्षकों की धारणाएँ : सिंगापुर के नमूने से साक्ष्य। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ लीडरशिप इन एजुकेशन, 13(3), 319–340।
2. कांत और रंगनवर (2013)। माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की संगठनात्मक प्रतिबद्धता पर स्कूल प्रमुखों के प्रशासनिक व्यवहार और कुछ सामाजिक–मनोवैज्ञानिक कारकों का प्रभाव। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड टेक्नोलॉजी,4(3),73–80। https://citeseerx.ist. psu.edu/viewdoc/download?doi=10.1.1.1063.1380&rep=rep1&type=pdf से लिया गया।
3. शर्मा, एम. (2014)। रोहतक जिले के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों के नेतृत्व व्यवहार का एक अध्ययन। अंतःविषय अध्ययन के लिए स्कॉलरली रिसर्च जर्नल, 2(10), 961–966।
4. बारपुजारी और स्वर्गियारी (2017)। नियोजन के संदर्भ में माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाचार्यों के प्रशासनिक व्यवहार पर एक अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड रिसर्च इन एजुकेशन एंड टेक्नोलॉजी, 4 (2), 34–37।
5. प्रकाश, जे., और गुप्ता, एस. आर. (2018)। निजी और सरकारी हाई स्कूलों के प्रिंसिपलों के प्रशासनिक व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन। इंडियन जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल रिसर्च, 26(3), 89–104।
6. शिए, ई.–एच., और चांग, एस.–एच. (2022)। शिक्षकों के संगठनात्मक नागरिकता व्यवहार और कल्याण पर प्रिंसिपल के प्रामाणिक नेतृत्व का प्रभाव। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल मैनेजमेंट, 36(3), 456–472।
7. एल्माज़ी, एल. (2023)। हाई स्कूल शिक्षकों की नेतृत्व शैली और नौकरी से संतुष्टि। यूरोपीय जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल डेवलपमेंट, 1(3), 45–58।
8. विल्किंसन, जे., और मिसन, ए. (2024)। स्कूलों में शिक्षक कल्याण को बढ़ाने में प्रिंसिपलों की भूमिका। जर्नल ऑफ कंटेम्पररी इश्यूज इन एजुकेशन, 19(1), 25–40।